महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर का नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) रांची विश्वविद्यालय में पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव

2023

शोध निर्देशक

डॉ. अजय कुमार सिंह
सह प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोधार्थी

बिरसा उराँव
M. Phil
दर्शनशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोध शीर्षक-

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर का नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

विषय परिचय:

विश्व के सभी समाजों में सदियों से नारी त्रासदी की कहानी रही है, जीवन के हर दायरे में चाहे वह सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक हो, उसकी अपनी कोई पहचान और अस्मिता नहीं है। परिवार से लेकर व्यापक समाज तक, नारी की पहचान पुरूष से बंधी है - पिता, पति, भाई और बेटा सामाजिकरण की यह प्रक्रिया उसे निश्चित मूल्यों से जोड़ती है, क्योंकि समाज की संरचना सीढ़ीनुमा है, समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर खड़ी नारी ने समाज की वर्जनाओं एवं निषेधाज्ञाओं को लांघते हुए पितृसत्ता और जातीयता को हमेशा कड़ी टक्कर दी है। चाहे वह चिंतन का क्षेत्र हो अथवा संघर्ष का दोनों स्तरों पर उसने अपने अस्तित्व व अस्मिता की लड़ाई को प्राचीन काल से लेकर आज तक जारी रखा है। जिस समाज में कुछ वर्ष पूर्व ही निर्धारित समय के बाद घर से निकलने पर प्रतिबंध था, अपने निकट के सगे-संबंधियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों से किसी प्रकार का मेल-जोल नहीं रखा जा सकता था, और बालकों की देखभाल तथा गृहस्थी का कार्य करने में ही नारी का कार्य क्षेत्र सीमित था और यही कार्यक्षेत्र हर वर्ग की नारी के लिए आदर्श माना जाता था । ऐसी पृष्ठभूमि में विविध रोजगार में नारी को कार्य करते देखकर आश्चर्य ही होता है।

भारत में भी नारी की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हो रहा है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है और सफल भी हो रही है। बात चाहे हम राजनीति की करे या व्यवसाय की, बात मीडिया की हो या भारी उद्योग की इंजीनियरिंग, चिकित्सा अंतरिक्ष और वैज्ञानिक शोध

की, हर क्षेत्र में नारी ने अपनी योग्यता और दक्षता साबित कर रही है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां नारी की प्रभाव उपस्थित न हो।

ज्योतिबा फुले विश्व के पहले महापुरूष थे, जिन्होंने नारी को पुरूष से भी श्रेष्ठ माना है। उनकी दृष्टि में नारी को वे सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो पुरूषों को प्राप्त हैं। यदि पुरुष बहुपत्नि विवाह का अधिकारी है, तो नारी भी बहुविवाह की अधिकारिणी होनी चाहिए अन्यथा पुरूषों का ये अधिकार निषिद्ध कर देना चाहिए। अपने स्पष्ट दृष्टिकोण और तर्क-विश्लेषण द्वारा भावी समाज की वकालत करने वालों में महात्मा ज्योतिबा फुले का नाम अग्रणी है। महात्मा ज्योतिबा फुले ने सोए हुए समाज में जागृति की एक चिंगारी जलाई, महाराष्ट्र के महान समाज सुधारक, विधवा पुनर्विवाह आंदोलन के अगुआ तथा नारी शिक्षा समानता के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 28 फरवरी 1827 को, पुना (महाराष्ट्र) में माता चिमनावाई तथा पिता गोविन्द राव जी के घर हुआ । ज्योतिबा फुले आधुनिक भारत में दलितों व नारी की शिक्षा व्यवस्था के लिए तथा मजदूरों, किसानों व समाज के कमजोर वर्ग की उन्नति के लिए चलाए गए सशक्त आंदोलन के लिए आज के जनमानस में मानवतावाद के प्रेरक हैं। सदियों से भारतीय समाज सर्वाधिक निन्दनीय पक्ष जातिगत बन्धन से जकड़ा रहा है, इस जातीय अभेद किले की दीवारों को तोड़ने का कार्य करने वाले महापुरूष ज्योतिबा फुले बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे । 13 साल के उम्र में ज्योतिबा फुले की शादी 9 साल की अबोध बालिका सावित्रीबाई फुले से हुई ।

सावित्रीबाई न केवल ज्योतिबा फुले की अर्धागिंनी थी, बल्कि उनके क्रांतिकारी आंदोलनों की भी अर्धागिंनी बन गयी थी । ज्योतिबा फुले के समान ही सावित्रीबाई फुले भी धैर्य, समर्पण एवं दूर-दृष्टि जैसे अलौकिक गुणों की स्वामिनी थी। उन्होंने नारी सेवा के लिए अपना घर, बच्चे एवं सभी सुखों को त्याग कर कांटों भरे रास्तों पर चल पड़ी थी । सावित्रीबाई का जन्म सतारा जिले के खंडाला तहसील के नयागांव में 3 जनवरी, 1831 ई. में खंडोजी नेवसे पाटिल के घर हुआ था।

इनकी शिक्षा की शुरूआत विवाह के बाद पति द्वारा हुई । ज्योतिबा फुले के समान ही उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले भी अनेक कष्ट सहन करते हुए, समाज की प्रताड़नाए सहते हुए, स्वयं शिक्षित हुई और भारत की प्रथम अध्यापिका का गौरव हासिल कर लिया । उन्होनें नारी शिक्षा आंदोलन हेतु स्वयं को समर्पित कर दी।

डॉ. अम्बेडकर संभवतः प्रथम ऐसे भारतीय सामाजिक चिंतक हुए, जिन्होंने महिलाओं की समस्या को लिंगी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया। उनके नारीवादी दृष्टिकोण के केंद्र में भारतीय समाज की सभी महिलाएं थीं। भारतीय संदर्भ में जब भी सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक असमानताओं और उसमें सुधारों के मुद्दे पर विचार हो रहा हो तो डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों को शामिल किए बिना बात पूरी नहीं हो सकती। उनका पूरा जीवन भारतीय समाज के रूढ़िवाद और अंधविश्वास पर आधारित संकीर्णताओं और विकृतियों को दूर करने पर ही विकेंद्रित रहा। डॉ. अम्बेडकर के भारतीय नारीवादी दृष्टिकोण की वैचारिकी का केंद्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था और समाज में व्याप्त परंपरागत धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएं ही थीं। जो महिलाओं को पुरुषों के अधीन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती रही हैं। वर्ष १९१६ में डॉ. अम्बेडकर ने मानव विज्ञानी अलेक्जेंडर गोल्डेंविसर द्वारा कोलम्बिया विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. में आयोजित सेमिनार में “कास्ट इन इंडियाः देयर मैकेनिज्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट” शीर्षक से पत्र पढ़ा जो जाति और लिंग के बीच अंतरसंबंधों की समझ पर आधारित था।

अनुसंधान का विषय (State of Art):

प्रस्तुत शोध का विषय महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर का नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन है । महात्मा ज्योतिबा फुले आधुनिक भारत के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने समाज में सामाजिक व सांस्कृतिक आंदोलन का सूत्रपात किया। वे वर्ण व्यवस्था, जातिभेद, किसानों, मजदूरों एवं नारी के हितों के लिए सदा संघर्ष करते रहें और

दलितों और महिलाओं के लिए सदियों से बंद पडे शिक्षा के दरवाजे खोलें, क्योंकि वे जानते थे कि समाज में बदलाव शिक्षा द्वारा ही लाया जा सकता है जिससे वे गरिमापूर्ण जीवन जी सकते है। इसलिए उन्होंने शिक्षा के प्रसार तथा समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे - बाल-विवाह, बाल - हत्या, सती-प्रथा, विधवा महिलाओं की दयनीय दशा, छुआछूत इत्यादि सामाजिक बुराईयों पर कड़ा प्रहार किया तथा भारतीय नारियों को सम्मानजनक स्थिति दिलाने के लिए उन्होंने वास्तव में ही ऐतिहासिक कार्य किया जो है नारी शिक्षा की व्यवस्था, नारी शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना ज्योतिबा फुले एवं उनके मित्र सदाशिवराव गोवंदे ने नारी शिक्षा के लिए प्रथम प्रयास अपने ही घर से प्रारंभ करने का निर्णय लिया ।

ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को शिक्षित करना प्रारंभ किया और स्वयं कन्याओं की शिक्षा हेतु एक पाठशाला पूना में खोली । कन्या पाठशाला का प्रारंभ केवल 8 छात्राओं से हुआ था, किन्तु शीघ्र ही यह संख्या बढ़कर 48 तक पहुंच गयी। अब तक उन्होंने एक पाठशाला प्रबंधन समिति भी बना ली थी। इस प्रबंध समिति ने 7 सितम्बर, 1851 ई. में एक और बालिका विद्यालय की स्थापना की। तत्पश्चात् 15 मार्च, 1852 ई. में एक और कन्या पाठशाला की स्थापना बेताल पेठ में की। इस प्रकार ज्योतिबा फुले ने 18 विद्यालय खोल दिये थे। इतने कम समय में इन पाठशालाओं की स्थापना करते समय फुले दम्पत्ति को सामाजिक और आर्थिक दोनों समस्याओं से जूझना पड़ा। ज्योतिबा द्वारा किए गए नारी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए ब्रिटिश सरकार ने जून 1852 में उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया।

भारत में हमेशा से शिक्षा प्रणाली में सभी सामाजिक तवको को जगह नहीं दी गई थी। नारी और दलित उनमें से दो ऐसे तबके थे। अंधविश्वासी समाज में सावित्रीबाई फुले एक तार्किक महिला थी। उन्होंने हर जातिगत पहचान की नारी के जीवन में शिक्षा के कारण आनेवाले बदलावों की जरूरत को महत्ता दी । उस दौर में समाज में कई नारी विरोधी सामाजिक कुरीतिया चरम पर थी,

जैसे जातीय पहचान के आधार पर छूआछूत, सती प्रथा, बाल-विवाह, शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक भेदभाव आदि। इन रूढ़ियों को तोड़कर महिलाओं के हित में कई रास्ते बनाने का श्रेय सावित्रीबाई फूले को जाता है। उन्हें नारी और दलितों को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। ज्योतिबा फुले सावित्रीवाई के पति होने के साथ-साथ उनके जीवन के इस उद्देश्य में उनके हमसफर हितैषी और समर्थक रहे। भारत में नारीवादी सोच की एक ठोस बुनियाद बनाने में सावित्रीबाई का साथ उनके पति ज्योतिबा फुले ने दिया। उन्होंने न केवल कुप्रथाओं को पहचाना बल्कि विरोध किया और समाधान पेश किया ।

सावित्रीबाई ने लड़कियों के लिए न सिर्फ पहला स्कूल ही खोला, बल्कि वे भारत की पहली महिला अध्यापिका बनीं। नारी प्रेरणा की स्रोत सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम अध्यापिका, समाज सेवी, क्रांतिकारी महिला के साथ ही भारत में नारी मुक्ति आंदोलन की प्रेणता भी है। उन्होंने जिस नारी मुक्ति आंदोलन का सूत्रपात किया था, उसकी बदौलत ही आज अनेक नारी उच्च पदों पर पहुच सकी है। सावित्रीबाई का नारी उत्थान में जो अभूतपूर्व योगदान था, वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारत की हर शिक्षित नारी उनकी ऋणी है । अतः प्रत्येक शिक्षित नारी का यह कर्तव्य बनता है कि वह इस महान् नारी सावित्रीबाई फुले से देश की सभी नारियों को अवगत कराए।

शिक्षा के क्षेत्र में जितना कार्य फुले दम्पत्ति ने किया है वे इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने का हकदार है। सही मायनों में नारी उत्थान हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयास अभूतपूर्व एवं अद्वितीय है। सावित्रीबाई फुले पूरे देश का गौरव है और देश की हर जागरूक जनता का यह कर्तव्य बनता है कि वे भारतीय नारी शिक्षा की प्रथम हिमायती नारी से अपने देश की नारियों को परिचित कराएं। आज फुले दम्पत्ति के कार्य, उपलब्धि व प्रेरणा से भारत के अन्य राज्यों की सामाजिक

स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है परंतु फुले दम्पत्ति के गुणों व कार्यों का उचित सम्मान पूरे भारतवर्ष में अब तक प्राप्त नहीं हुआ है।

नारी उत्थान के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले ने शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया । दलित एवं सभी वर्गों की नारी की स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन करना आवश्यक मानते हुए पाठशालाएं, कन्या पाठशालाएं एवं भारत की प्रथम रात्रि, पाठशाला, महिला छात्रावास आदि खुलवाये । शैक्षिक क्षेत्र में ज्योतिबा फुले का योगदान व शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये कार्यों की प्रासंगिकता तथा नारी उद्धारक के रूप में उनके कार्यों का तथा नारी शिक्षा में सावित्रीबाई फुले का योगदान नारी के लिए एक आदर्श स्थापित करती है।

डॉ. अम्बेडकर संभवतः प्रथम ऐसे भारतीय सामाजिक चिंतक हुए, जिन्होंने महिलाओं की समस्या को लिंगी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया। उनके नारीवादी दृष्टिकोण के केंद्र में भारतीय समाज की सभी महिलाएं थीं। भारतीय संदर्भ में जब भी सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक असमानताओं और उसमें सुधारों के मुद्दे पर विचार हो रहा हो तो डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों को शामिल किए बिना बात पूरी नहीं हो सकती। उनका पूरा जीवन भारतीय समाज के रुढ़िवाद और अंधविश्वास पर आधारित संकीर्णताओं और विकृतियों को दूर करने पर ही विकेंद्रित रहा।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक ओर जहां महात्मा गांधी ने सत्याग्रह से अनुप्रेरित अपने अहिंसक जन-आंदोलन के द्वारा देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दासता से मुक्त कराया तो वहीं दूसरी ओर डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक परिवर्तन की लहर के द्वारा हजारों वर्षों से उत्पीड़ित दलित एवं हाशिये के लोगों को स्वाधीनता एवं स्वाभिमान से जोड़ने का महान कार्य किया। "डॉ. अम्बेडकर भारत में एक ऐसे वर्गविहीन समाज को संरचना चाहते थे, जिसमें जातिवाद, वर्गवाद, संप्रदायवाद तथा ऊँच-नीच का भेद न हो और प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वों का निर्वाह

करते हुए स्वाभिमान और सम्मान पूर्ण जीवन जी सके।तथा ऊँच-नीच का भेद न हो और प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्यों का निर्वाह करते हुए स्वाभिमान और सम्मान पूर्ण जीवन जी सके।उनके मानवतावादी दृष्टिकोण के केंद्र में महिलाएं भी थीं क्योंकि भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति भी बहुत दयनीय थी। पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में महिलाओं पर धार्मिक और सांस्कृतिक आडंबरों के आधार पर शोषण किया जा रहा था। मुंबई की महिला सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भीमराव आंबेडकर ने कहा था कि-"नारी राष्ट्र की निर्मात्री है, हर नागरिक उसकी गोद में पलकर बढ़ता है, नारी को जागृत किए बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।" डॉ. अम्बेडकर महिलाओं को संवैधानिक अधिकार दिलाना चाहते थे। जिससे महिलाओं को सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक स्तर पर समानता का अधिकार मिल सके।

दलित समाज ने कितनी प्रगति की है। इसे में दलित स्त्री की प्रगति से तीलता हूं,' जैसी गंभीर और विचारोत्तेजक व स्त्रियों के पक्ष में की गई टिप्पणी के टिप्पणीकार 'डॉ. अम्बेडकर द्वारा स्त्रियों के पक्ष में किए गए कार्यों का अक्सर ऊपरी तौर पर दलित एवं गैर दलित साहित्यकारों द्वारा केवल वर्णन मात्र कर दिया जाता है, परन्तु उनमें यह गंभीर स्त्री चेतना कहाँ से आयी उनके जीवन के इस सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू को चर्चा रहित छोड़ दिया जाता है। डॉ. अम्बेडकर के सम्पूर्ण जीवन दर्शन पर बात करें तो यह अतिश्योक्ति पूर्ण कथन नही माना जा सकता है कि स्त्री और दलित स्त्री उनके व्यक्तित्व व उनके दर्शन का अमिट हिस्सा है और यह स्त्री दृष्टिकोण उनके परिवार, उनके आसपास, व विदेश में किए उनके अध्ययन व भिन्न-भिन्न प्रकार के आन्दोलनों में जुड़ने से आई। निसन्देह उनके स्त्री दर्शन के विकसित होने का मूलाधार परिवार की महिलाओं की उनके ऊपर पड़ने वाली अमिट छाप भी है।

डॉ. अम्बेडकर के भारतीय नारीवादी दृष्टिकोण की वैचारिकी का केंद्र ब्राह्मणवादी पितृसत्तात्मक व्यवस्था और समाज में व्याप्त परंपरागत धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएं ही थीं। जो महिलाओं को

पुरुषों के अधीन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती रही हैं। वर्ष 1916 में डॉ. अम्बेडकर ने मानव विज्ञानी अलेक्जेंडर गोल्डंविसर द्वारा कोलम्बिया विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. में आयोजित सेमिनार में "कास्ट इन इंडियाः देयर मैकेनिज्म", "जनेसिस एंड डेवलपमेंट" शीर्षक से पत्र पढ़ा जो जाति और लिंग के बीच अंतरसंबंधों की समझ पर आधारित था।

डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं को अधिकार और सम्मान दिलाने के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्त्व एवं समर्थन किया। उन्होंने समाज की प्रगति में महिलाओं के महत्त्व को समझते हुए कहा कि मैं किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस वात से लगाता हूँ कि उस समाज की महिलाओं की कितनी प्रगति हुई है। उन्होंने दलित महिलाओं की दयनीय स्थिति एवं जाति आधारित शोषण पर दृष्टिपात किया था। उन्होंने इस स्थिति को समझते हुए सवर्ण महिलाओं की समस्याओं के साथ-साथ दलित महिलाओं की समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया।

डॉ. अम्बेडकर का काल दलित महिलाओं की अपनी व समाज की स्वतंत्रता एवं समानता को लेकर की गई सक्रिय व संघर्ष पूर्ण भागीदारी का स्वर्ण काल है। डॉ. अम्बेडकर के समय में चले दलित आन्दोलन में लाखों-लाख शिक्षित-अशिक्षित, घरेलू, गरीब-मजदूर, किसान, दलित शोपित महिलायें जुड़ी। उन्होनें जिस निर्भीकता वेवाकी और उत्साह से दलित आन्दोलन में भागीदारी निभाई वह अभूतपूर्व थी। दलित महिला आन्दोलन और डॉ. अम्बेडकर के साथ महिला आन्दोलन की सुसंगत शुरूआत 1920 ई. से मान सकते हैं हालांकि सुगबुगाहट सन् 1913 ई. से ही हो गई थी। 1920 ई. में भारतीय वहिष्कृत परिपद की सभा कोल्हापुर नरेश छत्रपति शाहू जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस सभा में पहली बार दलित महिलाओं ने भाग लेकर अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। पहली वार दलित स्त्रियों ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए इस सभा में सौ. तुलसाबाई बनसोडे और रूकमणि वाई ने घरेलू भाषा में लड़कियों की शिक्षा पर बात रखी उन्होंने अपने विचार रखते

हुए कहा कि लड़कियों की असली शक्ति शिक्षा ही है। इस परिपद में लड़कियों के लिए अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा का प्रस्ताव पारित किया गया।

2.अनुसंधान की समस्या-

नारी शिक्षा के अनुसंधान में कई समस्याएं आती हैं, जो समाज में विशेषकर महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। यहाँ कुछ मुख्य्र समस्याएं दी गई हैं:

i. विभिन्नता की समस्या: नारी शिक्षा के अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण समस्या यह है कि महिलाओं के अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परियोजनाओं के कारण उनकी शिक्षा का स्तर भिन्न होता है।

ii. शैक्षिक सुविधाओं की कमी: बहुत से गांवों और छोटे शहरों में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती, जिसके कारण वे शिक्षा प्राप्त करने में परेशानी महसूस करती हैं।

iii. भारतीय समाज में लिंगानुपात: कई स्थानों पर लड़कों की शिक्षा को महत्व दिया जाता है और लड़कियों को घरेलू कामों में ही लगाया जाता है, जिससे उनकी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

iv. विवाह और परिवार की जिम्मेदारियों का परिचय: बहुत जगहों पर लड़कियों को बचपन से ही घरेलू कामों और परिवार की जिम्मेदारियों का परिचय कराया जाता है, जिसके कारण उनके लिए शिक्षा की प्राथमिकता सदबाव होता है।

v. आर्थिक समस्याएँ: कई परिवारों में आर्थिक समस्याएँ होने के कारण लड़कियों की शिक्षा को छोड़ देना पड़ता है।

3. अनुसंधान का उद्देश्य एवं मुख्य बिन्दु-

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर का नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन के कई महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया-

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, और डॉ. बी. आर. अंबेडकर भारतीय समाज के निष्काम कार्यकर्ता थे जिन्होंने समाज में न्याय, समानता और समरसता की दिशा में अपना योगदान दिया। उनकी नारीवादी दृष्टि कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर आधारित थी:

समानता का अधिकार: तीनों नेताओं ने समाज में समानता के अधिकार की मांग की, विशेष रूप से समाज में जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव के खिलाफ। उन्होंने नारीवाद के माध्यम से महिलाओं को समाज में समानता के अधिकारों की मांग की और उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज में भागीदारी में सुधार की मांग की।

शिक्षा का महत्व: तीनों नेताओं ने शिक्षा के महत्व को उजागर किया और समाज के हर व्यक्ति को शिक्षित बनाने के लिए प्रयास किया। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उनका प्रयास महत्वपूर्ण था।

समाजिक बदलाव: ये तीनों नेता समाज में सामाजिक बदलाव की आवश्यकता को समझते थे। उन्होंने जातिवाद, दासता प्रथा, विवाह में भेदभाव, बलात्कार, और अन्य समाजिक अन्यायों के खिलाफ लड़ा।

समाज में महिलाओं की भूमिका: महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं के अधिकारों की मांग की और महिलाओं को समाज में सम्मानित और स्वतंत्र बनाने के लिए प्रयास किया।

समाज में सामाजिक उत्थान: तीनों नेता समाज में सामाजिक उत्थान की मांग करते थे और दलितों, पिछड़ों, और अन्य समाज के वंचित वर्गों के लिए समानता की मांग की।

इन नेताओं की दृष्टि में, समाज में समानता, न्याय, और समरसता के लिए शिक्षा और समाज में महिलाओं की भूमिका को समझाना और सुधारना महत्वपूर्ण था। उन्होंने विभिन्न सामाजिक परंपराओं को चुनौती दी और समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। प्रस्तुत इस शोध प्रबंध का मुख्य बिन्दु महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले का नारी शिक्षा की अवधारणा की समीक्षा की जाए और तुलनात्मक रूप से यह देखा जाय कि महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले का नारी शिक्षा की अवधारणा में से अधिक उचित और संतोषप्रद नारी शिक्षा की अवधारणा कौन है एवं महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले का नारी शिक्षा की अवधारणा को तुलना एवं समीक्षा कर उचित शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत करना है।

4. **अनुसंधान की परिकल्पना-**

नारी का शोषण हर जगह होता है चाहे उच्च वर्ग हो या निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग में तो सबसे अधिक दीनहीन दशा में नारी रहती है आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है नारी शिक्षा की आवश्यकता को पहचानने की और आनेवाले समाज के लिए उसे स्थापित करने की । प्रस्तुत शोध में महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर का नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन कर ऐसा शिक्षा की अवधारणा को सामने लाने का प्रयास करेंगे जो विवेकपूर्ण एवं संतोषप्रद हो ।

5. अनुसंधान का प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति-

यह शोध कार्य संबंधित सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा । इस शोध कार्य के लिए मुख्यतः पुस्तकावलोकन विधि की सहायता ली जाएगी और यहाँ शोध के लिए विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग कर सामान्य निष्कर्षों की प्राप्ति का प्रयास किया जाएगा । यह शोध मुख्य रूप से एक शुद्ध शोध होगा परन्तु शोध के सैद्धांतिक पहलू के साथ व्यावहारिक पहलू पर भी विचार किया जाएगा।

6. अनुसंधान सम्बन्धित तथ्य संकलन-

तथ्य संकलन हेतु विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा और उन पुस्तकालयों में उपलब्ध नारीवादी से संबंधित मूल ग्रंथों एवं महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर संबंधित मूल ग्रंथों का अध्ययन कर सामग्री एकत्रित की जाएगी। इस शोध क्रम में विषय से संबंधित विचारकों एवं विद्वानों से संवाद किया जाएगा एवं उनके लेखों और शोध प्रबंधों से सहायता ली जाएगी ।

7. अनुसंधान सम्बन्धित तथ्य का विश्लेषण-

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, और डॉ. बी. आर. अंबेडकर के नारीवादी संबंधी विचारों का अध्ययन करते समय निम्नलिखित विश्लेषण करेंगे-

विचारों का विश्लेषण: शोध का प्रमुख उद्देश्य इन तीनों नेताओं के नारीवादी विचारों का विश्लेषण करना हो सकता है। इसमें उनके लिखित कामों, भाषणों, और सामाजिक परिवर्तन को ध्यान में रखकर महिलाओं के अधिकारों, समानता के मामले में उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण हो सकता है।

समाजिक परिवर्तन का मूल्यांकन: इस अनुसंधान में, उन्होंने कैसे समाज में नारीवाद के माध्यम से समाजिक परिवर्तन की कोशिश की और महिलाओं के हक को सुनिश्चित करने के लिए किस प्रकार के कदम उठाए, इसका मूल्यांकन किया जा सकता है।

संघर्ष और समर्थन की रूपरेखा: शोध के माध्यम से, उनके संघर्ष और समर्थन की प्रक्रिया की रूपरेखा बनाई जा सकती है जो महिला सशक्तिकरण और समाज में न्याय के लिए हुई।

सामाजिक परिवर्तन के परिणाम: उनके नारीवादी सोच के सामाजिक परिवर्तन पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा, खासकर महिलाओं के जीवन में कैसे बदलाव आया, इसे देखने का भी विशेष महत्व हो सकता है।

उनके विचारों का सम्बंध समाजिक संदेश से: उनके विचारों का समाजिक संदेश कैसे था, इसका विश्लेषण करके वह भविष्य में भी कैसे समाज को प्रेरित कर सकते हैं, इसे भी ध्यान में रखा जा सकता है।

यह अनुसंधान महिला सशक्तिकरण, समाज में समानता, और समाजिक न्याय के मुद्दों पर उन्होंने अपने दृष्टिकोण और कदमों का प्रकाश डाल सकता है।

8. अनुसंधान विषय का वर्तमान में महत्व एवं प्रासंगिकता-

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, और डॉ. बी. आर. अंबेडकर के नारीवादी संबंधी विचारों का अध्ययन वर्तमान में बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। यह विषय वर्तमान समाज में महिलाओं के अधिकारों, समानता, और न्याय के मुद्दों पर प्रकाश डालने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:

महिलाओं के अधिकार और समानता का मुद्दा: वर्तमान समय में भी विभिन्न स्तरों पर महिलाओं के अधिकार और समानता का मुद्दा महत्वपूर्ण है। नारीवादी दर्शनिकों के विचार और उनकी सोच का अध्ययन करना, वर्तमान महिला सशक्तिकरण और उनके अधिकारों की दिशा में समझने में मदद कर सकता है।

सामाजिक परिवर्तन और समाज में बदलाव: इन नेताओं के द्वारा प्रस्तुत विचार समाज में सामाजिक परिवर्तन और समाज में बदलाव की बात करते हैं। वर्तमान समय में भी समाज में न्याय, समानता, और समरसता के मुद्दों पर ध्यान दिया जा रहा है।

नारीवाद के सिद्धांत और समाज: नारीवादी सिद्धांतों का अध्ययन करना वर्तमान समाज में महिलाओं के स्थान और उनके अधिकारों को समझने में मदद कर सकता है।

शिक्षा और सामाजिक बदलाव: इन नेताओं ने शिक्षा के महत्व को उजागर किया था और समाज में सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षित व्यक्ति की भूमिका को जागरूक किया था। आज के समय में भी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

पुराने और वर्तमान की तुलना: इस अध्ययन से पुराने समय की सोच और वर्तमान के दृष्टिकोण को तुलना करके, महिलाओं के अधिकारों और समानता में हुए परिवर्तनों को समझा जा सकता है।

वर्तमान में भी इन नेताओं के नारीवादी सिद्धांतों का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज में न्याय, समानता, और समरसता की दिशा में दिशा प्रदर्शित कर सकता है।

9. वर्तमान ज्ञान में अनुसंधान विषय का योगदान-

अब तक के उपलब्ध ग्रंथों में नारी की शिक्षा, स्वतंत्रता का स्वरूप और उनके अधिकारों को विस्तृत रूप से देखने को नहीं मिलता है अतः मेरे शोध कार्य का यही महत्व है, की पाठकों का विस्तृत रूप से नारी की शिक्षा, स्वतंत्रता और उनके अधिकारों को पढ़ने को मिलेगा जो भविष्य में उनके लिए लाभदायक सिद्ध होगी ।

10. अनुसंधान विषय पर भविष्य में कार्य होने की संभावना-

यह शोध विषय वर्तमान समय में इतना सारगर्भित है कि इस विषय में शोध कार्य का विषय हमेशा ही महत्वपूर्ण रहा है। यह शोध विषय वर्तमान ही नहीं अपितु भविष्य में भी शोध कार्य होने की असीम संभावनाएँ रखता है क्योंकि समाज प्रत्यक्ष रूप से नारीवादी से प्रभावित होता है।

संभावित अध्याय :

भूमिका

प्रथम अध्याय : भारत में नारीवादी विचारधाराओं का विकास

द्वितीय अध्याय : महात्मा ज्योतिबा फुले के नारीवादी विचारधाराओं की अवधारणा

तृतीय अध्याय : सावित्रीबाई फुले की नारीवादी विचारधाराओं की अवधारणा

चतुर्थ अध्याय : डॉ. बी. आर अंबेडकर के नारीवादी विचारधाराओं की अवधारणा

पंचम अध्याय : महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. बी. आर अंबेडकर के नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं की समीक्षात्मक अध्ययन

निष्कर्ष

<u>*संदर्भ ग्रंथ सूची :*</u>

1. कीर्ति, विमल, *महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली अंक -1 एंव अंक-2,* एल. जी. प्रकाशन प्रा. लि., अंसारी मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली, 1996.

2. कीर्ति, विमल, *सावित्री फुले जीवनी,* सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2009.

3. वर्मा, डॉ. पी. एस., *दलित पीडा महात्मा फुले,* विमुक्त जाति ट्रेडिंगप्राइवेट लिमिटेड, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली, 1992.

4. वर्धन, ए. बी., *वर्ग जाति आरक्षण और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष,* राजस्थान पीपुल्स हाउस, जयपुर, 1990.

5. शहा, डॉ. मु ब., *भारतीय समाज क्रान्ति के जनक महात्मा ज्योतिबा फुले,* राधाकृष्णन प्रकाशन अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, 1998.

6. बौद्ध, शान्ति स्वरुप, *सावित्री बाई फुले सचित्र जीवनी,* सम्यक प्रकाशन, क्लब रोड पश्चिमपुरी, नई दिल्ली, 2004.

7. कान्त, सुरेश, *महात्मा ज्योति राव फुले,* स्मारक समिति, किदवई नगर, कानपुर, 1995

8. गंगवार, डॉ. ममता, *सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता महात्मा ज्योतिराव फुले साहित्य,* निलय प्रकाशन, कानपुर, 2007.

9. मुरलीधर, जगताप, *युगपुरूष महात्मा फुले,* चिरित्र साधने प्रकाशन समिति, महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय, मुम्बई, 1993.

10. देसाई, ए. आर., *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि,* मैकमिलन इण्डिया प्रेस, मद्रास, 1988.

11. सम्पा, नरके हरि, *महात्मा फूले साहित्य और विचार महात्मा फुले,* चरित्र प्रकाशन समिति, मुम्बई,1993.

12.आचार्य, डॉ. हेमलता. *भारत में सामाजिक क्रांति के पथ-प्रदर्शक ज्योतिबा फुले,* सम्यक प्रकाशन, 2015.

13. जाटव, डी०आर०. *मध्यकालीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास (भाग-1 व 2),* लक्ष्मी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.

14. Gupta, Reeta R. *Savitribai Phule: Her Life, Her Relationships, Her Legacy*. HarperCollins, 2023.

15. Kumar, Basant. *Dr. Ambedkar and Nationalism: An Insightful Exploration into the Political and Social Philosophy of One of India's Greatest Leaders*. Prabhat Prakashan, 2023.

16. Massey, James. *Dr. B.R. Ambedkar, a Study in Just Society*. Manohar Publishers and Distributors, 2003.

17. Reeta, and Vinit Raj. *First Indian Women Teacher: Savitribai Phule: Biography of Savitribai Phule*. Educreation Publishing, 2018.

18.Thakur, Ravindra. *Mahatma Jyotirao Phule.* Mehta Publishing House, 2020.

19. Keer, Dhananjay. *Mahatma Jyotirao Phule: Father of the Indian Social Revolution*. Popular Prakashan, 1997.

20. O'Hanlon, Rosalind. *Caste, Conflict and Ideology: Mahatma Jotirao Phule and Low Caste Protest in Nineteenth-Century Western India*. Cambridge UK, 2002.

21. Arya, Sunaina, and Aakash S. Rathore. *Dalit Feminist Theory: A Reader*. Taylor & Francis, 2019.